ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

आत्मनिर्भर भारत
Self-Reliant India

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 24/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

शशिकांत चंदेला
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
शासकीय महाविद्यालय
मेहंदवानी,
डिंडोरी मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

आत्मनिर्भर यानि किसी पर आश्रित न होकर स्वा वलंबी होना। यह भारत की विशिष्ट ता भी है और विश्वानस भी। आज भारत अखिल विश्व के प्रत्ये क क्षेत्र में यानि ज्ञान–विज्ञान, कला और संस्कृति जैसे सभी क्षेत्रों में अव्वल है। उसी प्रकार स्वा्वलंबी बनकर दुनिया में आत्मनिर्भर होने की मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। इससे दुनिया में अलग छवि बनेगी तो बनेगी ही आर्थिक रूप से सुदढ् हो सकेगा। यह सम्पूर्ण विश्व के लिए अनिकर्णीय है।

Being self-dependent means not being dependent on anyone but being self-reliant. It is also the unique strength of India and also of Viswanas. Today, India stands first in every field of the all-world i.e. knowledge, science, arts and culture. In the same way, by becoming self-reliant, it is showing the example of being self-sufficient in the world. If a different image is created in the world, it will only be able to become financially strong. It is indefinite for the whole world.

मुख्य शब्द : आत्मनिर्भर भारत।
Self-Reliant India.

प्रस्तावना

भारत भूमि कर्म को प्रधानता देती है साथ ही सबकी भावनाओं की कद्र करती है। यहां वसुधैव कुटुम्बकम की भावना जन–जन लिए हुए है। यह कर्म की प्रधानता ही भारतीयों को आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बनाने की चाहत में दृढ़ संकल्पित है। निश्चित ही हम कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए आतुर है। यह आत्मआनिर्भरता हमें शिखर तक पहुंचायेगी एवं मानवता का यथोचित विकास कर सकेंगे।

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्वा्लंबी बनाना एवं जीवन जीना
2. भारतीयों में आत्मी निर्भर बनने की ओर प्रवृत्त। करना।
3. आर्थिक रूप से सक्षम एवं सशक्त् बनाना।
4. नई संकल्पपना की ओर प्रवृत्तन होना तथा शक्ति का उपयोग मानव विकास में करना।
5. जीवन का असल उददेश्य शक्ति के साथ आगे बढना
6. इससे आर्थिक स्थिति संतुलित एवं विकासपरक होगी।

आज भारत विश्व पटल पर सभी क्षेत्र में विशेष रूप से अपनी पहचान बना चुका है। अब केवल आत्मनिर्भर भारत बनाने की आवश्यकता है। और आवश्यकता इसलिए है कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति यदि आत्मनिर्भर बन जाता है तो कितनी ही आपदा या कष्ट या समस्या आ जाये उनका स्वयं डटकर सामना कर सकते है ।किसी के सामने हाथ फैलाने की आवश्यता नही होगी ।इस अवधारणा को फलीभूत करने के लिये प्रत्येक मानव को सजग व तत्पर रहने की आवश्यकता है।आत्मनिर्भर भारत बनाने की कामना आज ही नही बल्कि मानव सभ्यता के समय से ही रही है। जिसे आज 130 करोड़ देशवासी पूरा करने के लिए अपना योगदान दें। ताकी देशवासी किसी पर निर्भर ना रहे हैं, और न ही किसी चीज के लिये मोहताज न होना पड़े।

यह सच है कि आज आत्म निर्भर भारत बनाने की मुख्यधारा में देश के सामने बड़ी चुनौती है। वर्तमान भारत सामाजिक रूढ़ियाँ और आर्थिक रिक्तता के भयंकर अहसास से गुजरता हुआ बार– बार टूटता हुआ पा रहा है। इस स्तिथि में पुरानी जीवन शैली व समाजवादी दृष्टि में परिवर्तन आवश्यक है तभी हमारा भारत आत्म निर्भर भारत बन सकता है। इस बात की प्रमाणिकता हरिवंशराय वच्चन की कविता श्एकांत संगीतश की पंक्तियाँ व्यक्त करती है। देखिये–

"कितना अकेला आज में
संघर्ष से टूटा हुआ
दुर्भाग्य से लूटा हुआ
परिवार से छूटा हुआ, कितना अकेला आज मैं।"

ऐसा ही कुछ गजानन माधव मुक्तिबोध की काव्य पंक्तिया बयां करती है–

"जिंदगी बड़ी तल्क (कठोर) है लेकिन मानव मिठास का क्या कहना।जी चाहता है सारी जिंदगी एक ही घूंट में पी ली जाए।"

आज का भारत श्रेष्ठ भारत ही नहीं बल्कि सर्वश्रेष्ठ भारत है। वर्तमान में भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने की सार्थक पहल की आवश्यकता है। समय की करुण पुकार अपने अंतर्मन की सचित्रता और सस्वरता के साथ आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए साकार रूप में प्रस्तुत करता हुआ दिखाई दे रहा है। कोशिश ही नहीं पूर्ण कोशिश की आवश्यकता है कि हमारा भारत प्यार और संघर्ष के माध्यम से नवीन बुलंदियों को छू सके। चंद्रकांत देवताले की श्आग श्कविता कि कुछ पंक्तियां आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए पूर्ण कोशिश के कशिश को अभिव्यक्त करती हुई दिखाई देती हैं। इस जीवन रूपी आग में जीवन जीना कितना दुर्लभ है, कितना कठिन है। इसलिए हमें आत्मनिर्भर भारत बनाकर ही जीवन जीना होगा, तभी हमारा जीवन सरल से सरलतम हो सकेगा। पंक्तियां देखियेगा–

"पैदा हुआ जिस आग से
खा जाएगी एक दिन वही मुझको
आग का स्वाद ही तो कविता प्रेम जीवन संघर्ष समूचा
और मृत्यु का प्रवेश द्वार भी जिस पर लिखा है'
मना है रोते हुए प्रवेश करनाश।"

आत्मनिर्भर भारत से यदि आप श्आत्मश शब्द का अर्थ श्स्वश से लेंगे तो निश्चित ही आत्मनिर्भरता का मार्ग कठिन प्रतीत होगा परंतु यहां आत्म शब्द का अर्थ श्विवेकश मानकर चलते है तो मार्ग सरल हो सकता है।अतः इसे सामान्य रूप से देखे तो एक व्यक्ति के लिए आत्मनिर्भर का मतलब है– निर्णय लेने के लिए अपने विवेक पर निर्भरता, समझने के लिए अपनी दृष्टि पर निर्भरता, और मार्ग तलाशने के लिए अपनी ही चेतना या प्रज्ञा पर निर्भरता।

आज समूचा विश्व कोरोना जैसी भयंकर महामारी से जूझ रहा है। इस संकटकाल की घड़ी में भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाना आवश्यक है। पर यह तभी संभव है , जब हमारे देश के प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर बन जाये ।अतः वर्तमान समय वर्तमान भारत के प्रत्येक व्यक्ति से कह रहा है कि इस भयंकर आपदा की मार से बचना तथा संपूर्ण मानव को अवसर में बदलने का एक अच्छा मौका है। जिससे हमारा भारत एक नई पहचान बना सके। और हमारा भारत विश्व पटल पर सबसे आगे रहे। देश के प्रत्येक व्यक्ति से आग्रह है कि आत्मनिर्भर भारत बनने में अपना सम्पूर्ण योगदान दे।

समस्त मानव समाज को आत्मनिर्भर बनने के लिए शासन प्रशासन का सहयोग देकर व सहयोग लेकर भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाया जा सकता है। वर्तमान में समस्त देश कोरोना जैसी भयंकर वैश्विक महामारी से जूझ रहा है और पूरे देश पर इसका बहुत ज्यादा असर पड़ा है। जैसे – सामान्य जीवन हो या सूक्ष्म , लघु तथा मध्यम उद्योग, श्रमिकों ,मजदूरों और किसानों पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ा है। ऐसी स्थिति में समस्त मानव समाज व साहित्य व शासन के बीच अच्छे संबंध होने से हमारा भारत आत्मनिर्भर बन सकता है तथा नई ऊंचाइयों को छू सकता है।

यह सच है कि साहित्य समाज का दर्पण है और आज साहित्य इस भयंकर महामारी में आईना का काम कर रहा है । आज देश और दुनिया के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। इसलिए समय के अनुसार मानव समाज को सजग रहने की आवश्यकता है। साहित्य मानव समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा देती है। आत्मनिर्भर भारत बनाने में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान मानव समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए चंद्रकांत देवताले का काव्य संग्रह श्उजाड़ में संग्रहालयश में संकलित शसिर्फ तारीखें नहीं बदला करते समयश कि कुछ काव्य पंक्तियां शिक्षा देती हुई दिखाई देती हैं। वे काव्य पंक्तियां कहती हैं कि– जीवन के दो भाग हैं एक होना और दूसरा रहना। अतः इस वैश्विक महामारी के समय में जीवन का रहना या होना कितना कठिन या दुर्लभ प्रतीत होता है। ओर यह छायायुद्ध आदमी के जीवन रूपी बगीचे में किस तरह जाती है। काव्य पंक्तियां बयां करती हैं कि–

" होने और रहने के बीच पता नहीं
यह कैसा छाया युद्ध है जिसकी धुंध में
सच के गवाहों को नहीं दिखाई देता ऐसा कोई रास्ता
जो आदमी के भीतर की बगीचा की तरफ जाता है।"

वर्तमान में भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में सामाजिक परस्परता के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में कारगर सिद्ध हो सकता है। संपूर्ण मानव समाज के अंदर की परस्परता देश राष्ट्र या विश्व को आत्मनिर्भर बना सकता है। हालांकि परस्परता में मितव्ययिता को जोड़कर भी इस संकल्प को पूरा किया जा सकता है। किन्तु हमें अपनी प्रतिबद्धता मजबूत करनी होगी। यह अवधारणा सकल समाज व सकल विश्व को आत्म निर्भर बनाने का परिचायक है । मानव समाज का जीवन बड़ा अजीब सा है । आज की दुनिया अलग सोच रखने वाली है। विष्णु खरे की कविता संग्रह श सब की आवाज के पर्देश में संकलित श्बगले श कविता का कुछ अंश इस बात का सटीक उदाहरण देती है। वे कहते हैं कि –

"अजीब मामला है वह सोचता है
कोई दिखता नहीं कोई बोलता नहीं
कोई दाखिल नहीं होता कोई बाहर नहीं जाता
फिर यहां होता क्या है
ठेठ गोंडों के मोहल्ले में पैदा हुआ वह
घबरा गया इस संभावना से
कि जब वह वहां से नहीं गुजरता
तब अचानक बस जाती है दुनिया इसमें।"

आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए समूलवासियों को सनातन से चली आ रही परंपरा का मोह को त्याग कर जीवन के विद्यालय में सत्य और अनुभूत सत्य के पाठ का अध्ययन करना होगा जिससे साधारण व सहज भाव को अपनाया जा सके और यह तभी संभव है जब जनता और साधारण जनता की अधिक निकट होने के कारण ही लोकप्रियता होगी। इसमें भी लोकप्रियता का यह प्रमाण जनता का दैनिक व्यवहार और शाश्वत जीवन मूल्य के रूप में स्थान पा सकेगा ।तब हमारे भारत को आत्मनिर्भर भारत बनने में कोई कठिनाई नहीं होगी। जैसे कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने विशुद्ध भारतीयता का प्रतिनिधित्व करते हुए राम के द्वारा समुद्र में पुल बांधने और रावण जैसे प्रचंड शत्रु को मार गिराने वाले वीरधर्मानुसार सारी पृथ्वी का सुख शांति और समृद्धि का द्योतक है ।उसी प्रकार समकालीन मानव जगत के लिए वैश्विक महामारी के दंश को झेलते हुए आत्मनिर्भर भारत बनाने की अपेक्षा अपेक्षित है। उन्होंने लिखा है कि–

"राम के समुद्र में पुल बांधने और रावण जैसे प्रचंड शत्रु को मार गिराने को हम केवल एक प्रेमी के प्रयत्न के रूप में नहीं देख सकते ,वीरधर्मानुनसार पृथ्वी का भार उतारने के प्रयत्न के रूप में देख सकते हैं।ष ऐसा ही कुछ आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए महादेवी वर्मा की श्दीपशिखाश का क्रमागत भावधारा का ही उत्कर्ष भी दिखाई देता है वर्तमान मानव समाज की वेदना की मूल संवेदना है करुण वेदना और निराशा को आक्रांत श्दीपशिखाश कुछ आलोकित पा सकता है। आशा का ,उल्लास का, मिलन का और आत्मनिर्भर भारत बनाने का ।यथा–

" सब बुझे दीपक जला लूं
घिर रहा तम आज दीपक रागिनी अपनी जगा लूँ।"

निष्कर्ष

आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए समस्त देशवासियों का आत्मनिर्भरता, आत्म बल और आत्मविश्वास से ही संभव है। इसलिए यह कार्य साहित्य के माध्यम से ही संभव हो सकेगा। और आप हम सभी मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाने में अपना योगदान दें। तथा देशवासियों के समक्ष जो सबसे बड़ी चुनौती आत्मनिर्भर भारत बनाने की है। इस कार्य को पूर्ण कर सकें। मुझे विश्वास है कि भारत की संस्कृति व भारत का संस्कार हमें सुख सहयोग व शांति के साथ अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत बनाकर भारत को विकास की नई दिशा के लिए अग्रसर करेगा। साहित्य व साहित्यकार आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे व्यक्ति पर सहारा बन सकने की शिक्षा देता है। जिससे देश के सवा सौ करोड़ देशवासी आत्मनिर्भर भारत बनाने में अपना योगदान देकर पुनीत कार्य में सहभागी बन सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शुक्ल, आचार्य रामचंद्र रू हिंदी साहित्य का इतिहासरू पृष्ठ– 599, मयूर पेपर बेक्स ए–95 सेक्टर 5 नोयडा 201301*
2. *देवताले, चंद्रकांत रू .पत्थर फेंक रहा हूँ रू पृष्ठ– 13, वाणी प्रकाशन 4695, 21–ए दरियागंज नई दिल्ली–110002,*
3. *देवताले, चंद्रकांत रू .पत्थर फेंक रहा हूँ रू पृष्ठ–11रू ,राजकमल प्रकाशन 1 वी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली–110002*
4. *खरे, विष्णु रू सब की आवाज के पर्दे मै, पृष्ठ– 12रू, राधा कृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड , 2ध्38 अंसारी मार्ग दरियागंज नई दिल्ली–110002*